देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास क़ुर्बानी

हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास क़ुर्बानी

आज का सबक हज़रत ईसा अल-मसीह की वफात यानी मौत के बारे में है, जो इंजील शरीफ़ में लिखा गया है, ख़ास तौर पर मत्ती सत्ताइस में।

इस वाक़िये में, हम पढ़ेंगे और जानेगें कि किस तरह हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए सलीब पर अपनी जान दी। ये क़िस्सा थोड़ा लंबा है, इसलिए हम थोड़ा थोड़ा करके पढ़ेंगे, और बीच बीच में बात भी करेंगे, और इसी तरह आगे बढ़ते जाएँगे।

चलिए, हम इंजील-ए-मत्ती (27:21-24) पढ़ते है।

फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थक्कर उन्होंने अरग़वानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी को देखा जो लीबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उसे उन्होंने सलीब उठाकर ले जाने पर मजबूर किया।

यूँ चलते चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए जिसका नाम गुलगुत्ता था। गुलगुत्ता यानी खोपड़ी का मक़ाम।

वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़ मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने से इनकार कर दिया।

जबकि हज़रत ईसा अल-मसीह ने कभी भी कोई भी गुनाह ना किया था, लेकिन फिर भी मज़हबी रहनुमाओं को उनसे नफ़रत थी। वो रात के वक़्त उन्हें गिरफ़्तार कर के अदालत ले गए और झूठ बोल कर उन पर इल्ज़ाम लगाया, ताकि उन्हें मरवा सकें। उन्हें डर था कि लोग हज़रत ईसा अल-मसीह को मानने लगेंगे और फिर लोग हमारी बात नहीं सुनेंगे। लेकिन असल बात ये है कि ये सब हज़रत ईसा अल-मसीह की अपनी ख़ुद की मर्ज़ी से हुआ। वो तो हमारे गुनाहों की क़ुर्बानी बनने के लिए ही आए थे। जब उन्हें गिरफ्तार किया गया, तो उन्होंने अपने साथियों से कहा: फ़िक्र न करो, अगर मैं चाहूँ तो अल्लाह ताला से कहूँ, और वो फ़रिश्तों की पूरी फ़ौज भेज देगा, मगर मेरी क़ुर्बानी का यही वक़्त है।

अब हम इंजील-ए-मत्ती (27:35-37) पढ़ेंगें।

फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस किस को क्या क्या मिले उन्होंने क़ुरा डाला।

यूँ वह वहाँ बैठकर उस की पहरादारी करते रहे।

www.taleemulkalam.org

सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख़्ती लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह ईसा है।"

सलीब पर मारना बहुत दर्दनाक और ज़ालिमाना तरीक़ा था, लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह ने ये सब कुछ हमारी ख़ातिर बर्दाश्त किया। इंजील शरीफ़, रोमियों की किताब बाब तीन की आयत तैईस हमें बताती है कि

"सब ने गुनाह किया है और अल्लाह के जलाल से महरूम हैं"

गुनाह की वजह से अल्लाह से हमारा रिश्ता टूट गया है। अल्लाह पाक है, हम गुनाहगार हैं। लेकिन इंजील शरीफ़, रोमियों की किताब बाब पाँच की आयत आठ में ये भी लिखा है कि
"अल्लाह ने अपनी मोहब्बत यूँ ज़ाहिर की कि जब हम गुनाह में थे, मसीह ने हमारे लिए जान दी"
यानी हज़रत ईसा अल-मसीह की मौत एक क़ुर्बानी थी, जो हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए दी गई।

आइयें, अब हम इंजील-ए-मत्ती (27:45-54) पढ़ेंगें।

दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही।

फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा शबक़्तनी" जिसका मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?"

यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, "वह इलियास नबी को बुला रहा है।"

उनमें से एक ने फ़ौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की।

दूसरों ने कहा, "आओ, हम देखें, शायद इलियास आकर उसे बचाए।"

लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

बहुत सारे लोग खड़े होकर ये मंज़र देख रहे थे। कुछ ने उन्हें पानी या मशरूब देना चाहा, मगर हज़रत ईसा अल-मसीह ने कुछ न पिया। आसमान पर भी अजीब मंज़र था, सूरज छुप गया, तीन घंटे अंधेरा रहा। फिर हज़रत ईसा अल-मसीह ने जान दे दी। वो आप के लिए और मेरे लिए क़ुरबान हुए। उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। ज़लज़ला आया, चटानें फट गईं और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहूम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया गया। वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाख़िल हुए और बहुतों को नज़र आए। जब पास खड़े रोमी अफ़सर और ईसा की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लज़ला और यह तमाम वाक़ियात देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, "यह वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था।

इसका मतलब ये नहीं कि वो जिस्मानी तौर पर अल्लाह के फ़रज़न्द यानी बेटे थे, बल्कि वह रूहानी तौर पर अल्लाह की एक ख़ास, पाक और बरगुज़ीदा शख्सियत थी, जो हमारे गुनाहों के लिए क़ुर्बानी बने।

अब हम हज़रत ईसा अल-मसीह की मौत के उन चार बड़े असरात के बारे में बात करेंगे।

www.taleemulkalam.org

पहला असर; बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा यानी अल्लाह के घर का पर्दा फट गया, मतलब ये कि अब हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़रिए अल्लाह से सीधा ताल्लुक़ मुमकिन है, जैसा कि खुद उन्होंने फ़रमाया: "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर ख़ुदा बाप के पास नहीं आ सकता।"

दूसरा असर; उनकी मौत के वक़्त ज़मीन पर ज़लज़ला आया, यानी क़ुदरत ने भी पहचान लिया कि कुछ बड़ा हो रहा है।

तीसरा असर; कुछ नबी और नेक लोग, जिनकी क़ब्रें यरूशलेम में थीं, जैसे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, हज़रत ज़करिय्या अलैहिस्सलाम —वो ज़िंदा हो कर आए, और हज़रत ईसा अल-मसीह के हक़ में गवाही दी।

चौथा असर; वो रूमी सिपाही, जिस ने हज़रत ईसा अल-मसीह को सूली पर चढ़ाया था, उस ने भी मान लिया कि हज़रत ईसा अल-मसीह अल्लाह की तरफ़ से भेजे गए एक ख़ास इंसान थे यानी वो खुदा के बैटे थे।

आज, जब आप ये वाक़िआ सुन रहे हैं, तो आप के पास भी एक मौक़ा है।

क्या आप अपने गुनाहों से तौबा कर के हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाएँगे? वही एक ऐसी शख़्सियत हैं जिन्होंने कभी भी गुनाह ना किया। उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के हुई, ताकि वो रूहानी तौर पर पाक हों। इसीलिए हज़रत याहया अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था, इंजील-ए-यूहन्ना (1:29)
"देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। '

हज़रत ईसा अल-मसीह आज भी आप के गुनाह धोना चाहते हैं, ताकि आप अल्लाह के क़रीब हो जाएँ। लेकिन ये तभी मुमकिन है, जब आप दिल से तौबा करें, और हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाएँ।

क्या आप आज से उन के सच्चे शागिर्द बनने के लिए तैयार हैं?

उम्मीद करता हूँ कि आप उनके सच्चे शागिर्द बनेगें।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....